दैनिक जागरण
www.jagran.com
झाँसी, 25 सितम्बर 2015
7
झाँसी

फ़सल सुधार को गोद लिए जाएंगे गाँव

- कृषि विश्वविद्यालय ने की तैयारी, पल्स सेण्टर शुरू
- रबी सीजन के लिए एक्सपर्ट्स की टीम उतरेगी गाँवों में
- नये-नये रिसर्च को धरातल पर उतारने के होंगे प्रयास

झाँसी : रबी की फ़सल को गुणवत्तायुक्त बनाने व फ़सल की पैदावार बढ़ाने के लिए कृषि विश्वविद्यालय ने तैयारियाँ पूरी कर ली हैं। इसके तहत बुन्देलखण्ड के उन गाँवों को चिह्नित किया जा रहा है, जहाँ इन फ़सलों की पैदावार प्रमुखता से की जाती है। इसके बाद इन गाँवों को गोद लेकर फ़सलों को नयी रिसर्च के तहत कराया जाएगा, ताकि फ़सलें गुणवत्तायुक्त हों और पैदावार भी बढ़े। विश्वविद्यालय ने प्रस्तावित पल्स सेण्टर की शुरूआत कर दी है, जो रबी सीजन से सक्रिय हो जाएगा।

महारानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय को बुन्देलखण्ड के किसानों के लिए मददगार के तौर पर देखा जा रहा है। विश्वविद्यालय ने बीएससी ऐग्रिकल्चर के शुरूआत करने के बाद किसानों के लिए काम शुरू भी कर दिया है। प्रत्येक फ़सल के लिए किसानों को नयी रिसर्च से अवगत कराने व उन रिसर्च को धरातल पर उतारने के लिए पल्स सेण्टर प्रस्तावित किया गया था, जिसकी शुरूआत इसी सप्ताह से कर दी गई है। सेण्टर इस बार की रबी फ़सल पर ध्यान फोकस करेगा। इसके तहत वैज्ञानिकों ने ऐसे गाँवों को चिह्नित करना शुरू कर दिया है, जहाँ के किसान रफ़ी की फ़सल की पैदावार प्रमुखता से करते हैं, पर नयी जानकारियों के अभाव में पैदावार कम होती है, या फिर गुणवत्ताहीन। इस सेण्टर पर कार्यरत टीम ऐसे गाँवों को चरणबद्ध तरीके से गोद लेगी। गाँव को गोद में लेने का मतलब यहाँ के किसानों को नयी रिसर्च से अवगत कराने के साथ ही उनकी फ़सलों की बुआई भी उसी आधार पर कराए जाने से है। इसके बाद उस गाँव के सबसे अच्छे किसान का चुनाव कर उन्हें अन्य किसानों को प्रेरित करने का दायित्व सौंपा जाएगा। रबी सीजन से नवम्बर माह से शुरू हो रहा है, इसलिए सेण्टर की टीम ने तैयारियाँ अभी से शुरू कर दी हैं। इसके बाद क्रमबद्ध तरीके से बुन्देलखण्ड के एक-एक गाँव को इसी पैटर्न पर गोद लिया जाएगा व वहाँ फ़सलों की गुणवत्ता में सुधार लाया जाएगा। इसके बाद यह सेण्टर हर सीजन की फ़सल पर इसी तरह से काम करेगा। विश्वविद्यालय अधिकारियों की मानें तो काम शुरू करने में थोड़ी मुश्किल है, एक बार शुरूआत हो गई, तो तस्वीर बदलते देर नहीं लगेगी। अन्य किसान भी फ़सल अच्छी होने पर उन्हीं किसानों से प्रेरणा लेंगे और इस चेन का हिस्सा बन जाएंगे। इसके बाद किसानों को फ़सलें बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाएगा, ताकि वे अधिक से अधिक लाभ कमा सकें। इस कार्य के लिए भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसन्धान केन्द्र, ग्रासलैण्ड व राष्ट्रीय कृषि वानिकी केन्द्र में कार्यरत वैज्ञानिकों की मदद ली जा रही है, जो लम्बे अरसे से गाँवों में समय दे रहे हैं। विश्वविद्यालय अधिकारियों का कहना है कि बुन्देलखण्ड में रबी की फ़सल सबसे महत्वपूर्ण होती है, इसलिए सबसे पहले इसको सुधार के लिए चुना गया है। धीमे-धीमे अन्य फ़सलों के लिए भी काम होगा।